1947

आधुनिक युग-एक, १९४७ ई० तक

घराने ११५
तानसेन-घराना ११६
सेनिए ११७
कव्वाल बच्चों का घराना ११८
दिल्ली-घराना ११८
आगरा-घराना (पहला) १२०
आगरा-घराना (दूसरा) १२१
फतेहपुर-सीकरी-घराना १२१
ग्वालियर-घराना १२२
सहारनपुर-घराना १२२
सहसवान-घराना १२३
अतरौली-घराना १२३
सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)-घराना १२४
खुर्जा-घराना १२५
जयपुर-घराना १२५
मथुरा-घराना १२६
उन्नीसवीं शताब्दी के कुछ अन्य प्रसिद्ध संगीतज्ञ १२६
कुछ अन्य प्रसिद्ध गायक १२८
कुछ अन्य प्रसिद्ध वादक १२८
कुछ प्रसिद्ध नृत्यकार १३०
संगीत-सम्मेलन १३०
रवीन्द्र-संगीत १३०
स्कूल और कालेज १३०
पत्र-पत्रिकाएँ १३१

1947

आधुनिक युग-दो, १९४७ ई० उपरान्त

स्वतन्त्र भारत में संगीत १३२

राष्ट्रीय गीत का इतिहास १३४

आधुनिक युग–१
(१८५० से १९४७ ई०)

अंग्रेजों ने भारतीय संगीत की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। शासक वर्ग की इस उदासीनता के कारण यह कला निम्न श्रेणी के व्यवसायी लोगों में जा पहुँची। जिन रियासतों की, भारतीय संगीत की ओर कुछ सहानुभूति और प्रेम की दृष्टि थी, वह भी अब नवीन पद्धति की शिक्षा पाकर समाप्त हो गयी। इस प्रकार संगीत को उचित राज्याश्रय न मिलने और जनता का झुकाव पाश्चात्य सभ्यता की ओर होने के कारण यह कला ऐसे व्यक्तियों के हाथों में पहुँच गयी, जो समाज में घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। इन व्यवसायियों ने संगीत के उज्ज्वल व पवित्र रूप को विकृत कर दिया। फलस्वरूप वेश्याओं ने संगीत पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया। उन्होंने इसे अपने रंग में रँग लिया। सभ्य समाज शास्त्रीय संगीत की उपेक्षा करने लगा।

घराने

इन परिस्थितियों के कारण संगीतज्ञों में अशिक्षा, मूढ़ता, संकीर्णता और स्वार्थपरता प्रवेश कर गयी। उनके सम्मुख व्यक्तिगत स्वार्थ ही सर्वोपरि रह गया। इस वैयक्तिक स्वार्थ के

गर्भ से संगीत में घरानों की उत्पत्ति हो गयी। इन संगीतकारों ने सोचा कि संगीतकला को जनता से जितना छिपाकर रखा जायेगा, उतनी ही उनकी प्रतिष्ठा अधिक बढ़गी। वे सबके सब संकुचित मनोवृत्तियों के शिकार हो गये। राष्ट्र और समाज के हित का ध्यान ही नहीं रहा। इस प्रकार ब्रिटिश काल के भारतीय संगीत में यदि कोई सबसे बुरी बात हमें मिलती है तो वह घरानों का निर्माण है। इस प्रकार भारतीय संगीत घेरों में विभक्त हो गया और उसके सार्वभौम व सनातन सिद्धांतों को गहरी क्षति पहुँची। घरानेदार कलाकार दंभी और कूप-मंडूक बन गए। न तो वे बाहर के कलात्मक ज्ञान को ग्रहण करते थे और न अपने ज्ञान को वितरित करना उचित समझते थे। कुछ लोगों ने इसका विरोध भी किया, किन्तु उनकी आवाज में इतना बल नहीं आ पाया कि वे इसे समाप्त कर देते।[1]

इन घरानों में मुख्य घराने तथा उनके कलाकारों का संक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है :—

तानसेन-घराना

तानसेन अकबर के राज्यकाल के एक श्रेष्ठ कलाकार थे, जिनके विषय में अबुलफज्ल ने कहा है कि पिछले एक हजार वर्षों में ऐसा गायक पैदा नहीं हुआ। इनके दामाद नौबत खाँ उत्तम वीणा-वादक थे। इसी घराने के कलाकारों में रामपुर के उमराव खाँ खंडारे, उनके पुत्र रहीम खाँ तथा अमीर खाँ और

१. स्टडी आफ इण्डियन म्यूजिक —जान होवर

अमीर खाँ के पुत्र वज़ीर खाँ उत्तम बीनकार थे। वजीर खाँ,[1] रामपुर-नवाब हामिद अली और स्व० भातखण्डे जी के गुरु रहे। इनके पौत्र दबीर खाँ आज भी उत्तम बीनकारों में गिने जाते हैं। तानसेन के समकालीन बृजचन्द, श्रीचन्द और बाबा मदन-राय तथा सादुल्ला खाँ इत्यादि अन्य उत्तम कलाकार थे।

सेनिये

तानसेन के घराने से सम्बन्धित अन्य लोग सेनिये कहलाये। इनमें लखनऊ के जाफ़र खाँ और प्यार खाँ प्रसिद्ध रबाबिए थे। मसीत खाँ सितार-वादक थे। इन्हीं की शैली को मसीतखानी बाज कहते हैं। जयपुर के अमृत हुसैन[2] और ग्वालियर महाराज माधवराव सिंधिया के गुरु हमीर खाँ[3] भी इस घराने के उत्तम सितार-वादक थे। इनके अतिरिक्त इस घराने के कलाकारों में मम्मू खाँ के पुत्र हफ़ीज़ खाँ[4], निहालसैन[5], फ़ज़ल हुसैन और फ़िदा हुसैन, हिम्मतसैन और रहीमसैन अन्य सितार-वादक तथा आलम हुसैन और सुखसैन[6] गायक, लालसैन बीनकार, बहादुर हुसैन खाँ (रामपुर-नवाब क़ल्बेअली खाँ के गुरु) तथा दूल्हे खाँ गायक और तन्त्रकार; सादिक अली खाँ[7] और ढाका के कासिम अली खाँ (सुरसिंगार-वादक) इत्यादि थे। इन्हीं बहादुर हुसैन के समकालीन कुदऊसिंह[8] पखावजी थे।

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १९२० ई०, २. १८८० ई०, ३. १९१३ ई०, ४. १९०९ ई०, ५. १९१५ ई०, ६. १८५० ई०, ७. १८७० ई०, ८. १८४० ई०।

कव्वाल बच्चों का (घराना)

दिल्ली में सावन्त और बूला नामक दो भाई रहते थे। इन दोनों का खानदान कव्वाल बच्चों का खानदान कहलाता है। इस घराने में शक्कर खाँ, मक्खन खाँ और जद्दू खाँ प्रसिद्ध ख़यालिए हुए हैं। इनके अतिरिक्त शक्कर खाँ के पुत्र मुहम्मद खाँ; इनके शिष्यों में हद्दू खाँ और हस्सू खाँ; भाइयों में अहमद खाँ, रहमत खाँ और हिम्मत खाँ, पुत्रों में अमान अली, बाक़िरअली, मुबारकअली, मुनव्वर खाँ और फैयाज़ खाँ उत्तम गायक थे। मुहम्मद खाँ के भतीजे वारिस अली खाँ और इनायत हुसैन खाँ तथा लखनऊ के (ठुमरी-गायक) सादिक़ अली खाँ और ग्वालियर के गणपत राव अधिक प्रसिद्ध हैं। गणपत राव के शिष्यों में गया के गफूर खाँ, जोधपुर के बशीर खाँ, ग्वालियर के जंगी, लखनऊ के सज्जादहुसैन, गौहरजान, आगरे की मलिकाजान, कलकत्ते की जद्दनबाई और बाबू श्यामलाल अधिक प्रसिद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त सादिक़ अली खाँ के शिष्यों में मौजुद्दीन खाँ तथा अन्य कलाकारों में फ़ज़ले अली, मुज़ाहिर खाँ, रजब अली खाँ, इमदाद खाँ, करम अली, दिलावर अली, हुसैन खाँ, मीराबख़्श और तन्नू खाँ इत्यादि प्रसिद्ध कलाकार हुए।

दिल्ली-घराना

कव्वाल बच्चों के खानदान में अचपल[1] एक प्रसिद्ध गायक थे। इनके अतिरिक्त बड़े छंगे खाँ,[2] शादी खाँ, मुराद अली, बहादुर खाँ,[3] दिलावर खाँ,[4] मीर नासिर अहमद, पन्नालाल

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १८६० ई०, २. १८५७ ई०, ३. १९०४ ई०, ४. १९०९ ई०।

गुसाँई,[1] नूर खाँ,[2] हापुड़ घराने के यूसुफ़ खाँ, वज़ीर खाँ, सदरुद्दीन खाँ,[3] अलीबख्श खाँ, मुहम्मद सिद्दीक खाँ तथा सिद्दीक खाँ के शिष्यों में अहमद खाँ, इनायत खाँ पंजाबी, बाबा रामप्रसाद और सिद्दीक़ खाँ के पुत्रों में नसीर अहमद खाँ[4] इत्यादि प्रसिद्ध गायक हुए थे।

दिल्ली के पास डासना कस्बे के रहनेवाले क़ादिर बख़्श तथा इनके पुत्र कुतुब बख्श, जिन्हें बहादुर खाँ जफ़र के द्वारा तानरस खाँ[5] की उपाधि मिली हुई थी, उत्तम गायक थे। इनके पुत्रों में उमराव खाँ और शिष्यों में पटियाले के अलीबख्श और फतेहअली (जिन्हें नरेश ने 'जनरल-कर्नल' की उपाधि से विभूषित किया था), अब्दुल्ला खाँ, जहूर खाँ, महबूब खाँ व इनायत खाँ और भतीजे शब्बू खाँ,[6] अधिक प्रसिद्ध हुए। उमराव खाँ के पुत्रों में सरदार खाँ तथा इनके शिष्यों में अब्दुल अजीज खाँ[7] ने अधिक प्रसिद्धि पायी।

तानरस खाँ के समकालीन गायकों में सिकन्दराबाद के जहूर खाँ, ग्वालियर के नत्थन खाँ और रहमत खाँ, अतरौली के अल्लादिया खाँ, महमूद खाँ दर्स, जोधपुर के पुत्तन खाँ और नसीर खाँ इत्यादि थे। महमूद खाँ के पुत्र मसीत खाँ ने 'मगन पिया' के नाम से रचनाएँ की हैं।

इसी समय के प्रसिद्ध कलाकारों में मियाँ जान खाँ, फतेह

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १८८५ ई०, २. १८९० ई०, ३. १८८० ई०, ४. १९४४ ई०, ५. १८९० ई०, ६. १९३९ ई०, ७. १९४० ई०।

अली के पुत्र आशिक अली खाँ और शिष्यों में काले खाँ[1] अधिक प्रसिद्ध थे। काले खाँ के भतीजे बड़े गुलाम अली खाँ तथा बड़े गुलाम अली खाँ के भाई बरकत अली खाँ, लाहौर के गुलाम मोहम्मद खाँ तथा इनके भाई रमजान खाँ और अता मुहम्मद उत्तम कलाकार हैं।

आगरा-घराना (पहला)

इस घराने के प्रसिद्ध लोगों में हाजी सुजान खाँ के कुटुम्ब के श्यामरंग और इनके भाई सरसरंग उत्तम गायक थे। श्यामरंग के छोटे पुत्र घग्घे खुदाबख्श बड़े प्रसिद्ध गायक हुए। घग्घे खुदाबख्श के शिष्यों में इनके बड़े पुत्र गुलाम अब्बास खाँ[2] छोटे पुत्र कल्लन खाँ (इनका असली नाम गुलाम हैदर खाँ था),[3] भतीजे शेर खाँ[4] भरतपुर के अलीबख्श और जयपुर के पं० शिवदीन और शेर खाँ के पुत्र नत्थन खाँ[5] थे। नत्थन खाँ के पुत्रों में मुहम्मद खाँ,[6] अब्दुल्ला खाँ,[7] मुहम्मद सिद्दीक खाँ[8] और नन्हे खाँ[9] थे। इनके अतिरिक्त इस घराने के अन्य कलाकारों में फैयाज हुसैन[10] बड़े प्रसिद्ध हुए। बशीर अहमद खाँ तथा इनके शिष्यों में दीपाली नाग तसद्दुक हुसैन, असद अली, खादिम हुसैन खाँ, अनवर हुसैन खाँ, लताफत हुसैन खाँ, अकील अहमद खाँ, शफीकुल हसन, रामजी भगत, स्वामी वल्लभदास, गोविन्द राव टेम्बे,[11] दिलीप चन्द्र वेदी, भास्कर बुआ बखले[12] तथा

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १९१५ ई०, २. १९३२ ई०, ३. १९२५ ई०, ४. १८६२ ई०, ५. १९०१ ई०, ६. १९२२ ई०, ७. १९२२ ई०. ८. १९१७ ई०, ९. १९४५ ई०, १०. १९५० ई०, ११. अज्ञात, १२. १९२२ ई०।

बखले जी के शिष्यों में मास्टर कृष्णराव, बाल गंधर्व, केतकर बुआ, चितू बुआ और ताराबाई शिरोड़कर प्रमुख हैं। श्रीकृष्ण नारायण रातांजनकर, मुहम्मद बशीर खाँ,[1] जगन्नाथ बुआ पुरोहित और पुरोहित जी के शिष्यों में मोहन तारा, गुलाब बाई, राम मराठे, सुरेश हलदनकर, गजानन राव जोशी, इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं, मथुरावाले गुलामरसूल और विलायत हुसैन खाँ तथा इनके पुत्र यूनिस हुसेन खाँ इस घराने के अन्य प्रसिद्ध कलाकार हैं।

आगरा-घराना (दूसरा)

इस घराने के प्रथम प्रसिद्ध गायक कलाकार इमदाद खाँ[2] थे, जिनका जन्म सन् १८०० ई० में हुआ। इनके अतिरिक्त हमीद खाँ, नन्हें खां, सलेम खाँ, सलेम खाँ के पुत्रों में प्यार खाँ[3] (जलतरग-वादक), लताफ खाँ[4], महबूब खाँ[5] और रजा हुसैन हुए।

फतेहपुर सीकरो-घराना

फतेहपुर सीकरी में शेख सलीम चिश्ती के दरगाह के दरबार में जैनू खाँ, जोरावर खाँ और दूल्हे खाँ प्रसिद्ध कव्वाल थे। दूल्हे खाँ के पुत्र घसीट खाँ[6] और छोटे खाँ[7] (पखावजी) तथा कलाकारों में गुलाम रसूल खाँ, शाद खाँ, फिदा हुसैन, मदार बख्श (भरतपुर के) और नदिया खानदान के केसर खाँ, धन्ने खाँ तथा अली खाँ अधिक प्रसिद्ध हुए।

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १९३६ ई०, २. १८६० ई०, ३. १९१५ ई०, ४. १९२५ ई०, ५. १९२० ई०, ६. १८८० ई०, ७. १९१२ ई०।

ग्वालियर-घराना

इस घराने का प्रारम्भ अब्दुल्ला खाँ और कादिरबख्श खाँ नामक दो भाइयों से हुआ। कादिरबख़्श खाँ के पुत्रों में नत्थन खाँ और पीरबख्श तथा नत्थन खाँ के पुत्रों में हद्दू खाँ,[1] हस्सू खाँ और नत्थू खाँ थे। हद्दू खाँ के पुत्रों में मुहम्मद खाँ और रहमत खाँ तथा इनके भाई के पुत्र निसारहुसेन खाँ और हद्दू खाँ के शिष्यों में रामकृष्ण बुआ, दीक्षित पंडित,[2] जोशी बुआ, बाला गुरु और बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर अधिक प्रसिद्ध हुए। इनमें बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर की शिष्य-परम्परा में विष्णुदिगम्बर पलुस्कर, मिराशी बुआ, अनन्त मनोहर जोशी, भाटे बुआ, इंगले बुआ, इनके पुत्र अन्ना बुआ, विष्णुदिगंबर जी के शिष्यों में ओंकारनाथ ठाकुर, बी० आर० देवधर, विनायकराव पटवर्धन, शंकरराव व्यास नारायणराव व्यास, स्व० डी० वी० पलुस्कर (पुत्र) इत्यादि उच्च श्रेणी के कलाकार हुए।

सहारनपुर-घराना

इस घराने में निर्मल शाह के शिष्य मुहम्मद जमा एक सूफी सन्त थे, जो कि बीन, रबाब और सितार बजाने के अतिरिक्त गायन में भी अद्वितीय थे। यह बहादुरशाह जफर के दरबार में थे। इनके अतिरिक्त गुलाम तकी तथा गुलाम जाफर और गुलाम जाफर के पुत्र बन्देअली, बहराम खाँ और बहाराम खाँ के शिष्यों में गौकी बाई, फरीद खाँ पंजाबी, मौलाबख़्श (साँखड़े वाले), मियाँ कालू (पटियाले के); पुत्रों में अकबर खाँ और सद्दू खाँ तथा इनके भाई हैदर खाँ के पौत्र जाकिरउद्दीन

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १८०७ ई० २. १८०० ई०।

खाँ, अलाबन्दे खाँ और बन्देअली खाँ थे। जाकिरउद्दीन खाँ के पुत्रों में जियाउद्दीन खाँ और अलाबन्दे खाँ के पुत्रों में नसीर-उद्दीन खाँ, रहीमुद्दीन खाँ इमामउद्दीन खाँ और हुसेनउद्दीन खाँ प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। बहराम खाँ पौत्र इनायत खाँ तथा भान्जे अब्बन खाँ और इनायत खाँ के पुत्र रियाजउद्दीन खाँ थे। आधुनिक ध्रुवपद-गायक डागर बन्धुओं में अमीनउद्दीन खाँ और स्व० मुईनउद्दीन खाँ[1] दोनों भाई नसीरउद्दीन खाँ के सुपुत्र हैं।

सहसवान-घराना

इस घराने में हद्दू खाँ के दामाद और बहादुरहुसेन खाँ के शिष्य इनायतहुसेन खाँ अधिक प्रसिद्ध हुए। इनके भाइयों में अलीहुसेन तथा मुहम्मदहुसेन खाँ बीनकार एवं शिष्यों में रामकृष्ण बझेबुआ, छज्जू खाँ, नज़ीर खाँ, खादिमहुसेन खाँ और मुश्ताकहुसेन खाँ ने अधिक प्रसिद्धि पायी। इस घराने में हद्दू खाँ के शिष्यों में इमदाद खाँ अधिक प्रसिद्ध हुए। इनके पुत्रों में अमजदहुसेन और वाजिदहुसेन तथा शिष्यों में कुमार गन्धर्व और बी० आर० देवधर उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त इस घराने के हैदर खाँ, इश्तियाक़हुसेन और निसारहुसेन भी प्रसिद्ध कलाकार हैं।

अतरौली-घराना

अलीगढ़ के निकट अतरौली में अनेक गौड़ ब्राह्मण गायकों ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था। ऐसे ब्राह्मणों के घरानों के प्रसिद्ध कलाकारों में काले खाँ, चाँद खाँ, हुसेन खाँ,[2]

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. मई १९६६ ई०। २. १८३६ ई०।

चिम्मन खाँ, ख्वाजा अहमद खाँ, शाद्ब खाँ के पुत्र मानतोल खाँ और जहूर खाँ थे। इसी घराने के अन्य प्रसिद्ध कलाकारों में दुल्लू खाँ, छज्जू खाँ, गुलाम ग़ौस खाँ, खैराती खाँ, करीम बख्श (खैराती खाँ के पुत्र), सादत खाँ, करीम बख्श खाँ (मानतोल खाँ के पुत्र), जहाँगीर खाँ, हक्कानी बख़्श, इमाम बख़्श, भूपत खाँ, गुलाब खाँ, अहमद खाँ, नसीर खाँ, मुहम्मद खाँ, नत्थू खाँ, दौलत खाँ, अली अहमद खाँ,[1] गुलाम हुसैन, मुन्नू खाँ, ख्वाजा अहमद खाँ के पुत्र अल्लादिया खाँ[2]; अल्लादिया खाँ के शिष्यों में मंजी खाँ, (सही नाम बदरुद्दीन खाँ), भुरजी खाँ (सही नाम शम्सुद्दीन खाँ), केसरबाई केरकर, मोगूबाई, अजमत हुसैन, बशीर खाँ[3], हैदर खाँ,[4] मल्लिकार्जुन मसूर, महमूद भाई सेठ, गजानन राव जोशी, अजमत हुसेन खाँ तथा अजमत हुसैन खाँ के शिष्यों में नलिनी बोरकर, दुर्गाबाई शिरोड़कर, टी० एल० राजू, माणिक वर्मा, इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त शाकिर खाँ, मदन खाँ, हैदर खाँ, इब्राहीम खाँ, अहमद खाँ, नत्थन खाँ[5] तथा नत्थन खाँ के शिष्यों में सरस्वती राने, देशपांडे इत्यादि हैं। नासिरुद्दीन खाँ और अज़ीज़उद्दीन खाँ का सम्बन्ध भी इसी घराने से है।

सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) घराना

इस घराने के प्राचीन गायक भोया और भुनगा नाम के दो सगे भाई थे। इनके अतिरिक्त रमज़ान खाँ, इनके भतीजे

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १९१२ ई०, २. १९४६ ई०, ३. १९३८ ई०, ४. १९३५ ई०, ५. १९४६ ई०।

मुहम्मद अली खाँ,[1] अमीर खाँ,[2] कुतुबअली खाँ, उल्ला खाँ, अजमत उल्ला खाँ, कुदरत उल्ला खाँ,[3] ज़हूर खाँ, फ़िदा हुसेन खाँ, मुहम्मद अली खाँ,[4] बदरुज़्ज़मा[5], मुज़फ्फर खाँ तथा कुतुबअली के पुत्र गुलाम अब्बास खाँ थे।

खुरजा घराना

इस घराने के जोधे खाँ नामक संगीतज्ञ खुरजे में आकर बस गये थे। इनके पुत्र इमाम खाँ तथा पौत्र गुलाम हुसेन खाँ, गुलाम हुसेन खाँ के बड़े पुत्र जहूर खाँ, छोटे पुत्र गुलामहैदर खाँ[6] और सितारिये मुन्शी गफूरबख्श थे। जहूर खाँ के पुत्र स्व० अल्ताफ़हुसेन खाँ तथा अल्ताफ़हुसेन खाँ के पुत्र मुहम्मद वाहिद खाँ और मुमताज अहमद खाँ उत्तम गायक हैं।

जयपुर-घराना

रजबअली खाँ अलीगढ़ में पैदा हुए थे, परन्तु जयपुर में जाकर बस गए। जयपुर के अन्य प्रसिद्ध कलाकारों में साँवल खाँ, मुशर्रफ़ खाँ,[7] मुसाहब अली[8], सादिकअली खाँ, जमालुद्दीन खाँ,[9] शमसुद्दीन खाँ,[10] आबिद हुसेन, अमीरबख्श, करामतखाँ, नज़ीर खाँ, मुहम्मद अली खाँ, आशिक अली खाँ[11] और हैदर खाँ (जो बाद में दिल्ली आ गये थे) इत्यादि थे।

मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १८९० ई०, २. १८६० ई०, ३. १९२० ई०, ४. १९२५ ई०, ५. १९३९ ई०, ६. १९२० ई०, ७. १९०९ ई०, ८. १९१२ ई०, ९. १९१९ ई०, १०. १९२० ई०, ११. १९१५ ई०।

मथुरा-घराना

इस घराने का प्रारम्भ 'कौड़ी रंग' और 'पैसा रंग' नामक दो भाइयों से होता है। अठारहवीं शताब्दी में पान खाँ तथा उनके पुत्र बुलाकी खाँ, पौत्र महताब खाँ; महताब खाँ के पुत्र मीराबख्श खाँ और पौत्र अहमद खाँ (उपनाम गुलदीन खाँ), गुलदीन खाँ के भाई नजीर खाँ[1]; इनके पुत्र काले खाँ[2] और पौत्र गुलाम रसूल खाँ के अतिरिक्त फैयाज़ खाँ, मुन्नन खाँ, ज़हूर खाँ, चौबे चुक्खा और गणेशी[3] तथा चन्दन जी चौबे उच्च श्रेणी के कलाकार हुए। इनमें अधिकांश सितार-वादक थे।

१९ वीं शताब्दी के कुछ अन्य प्रसिद्ध संगीतज्ञ

इनके अतिरिक्त सन् १८५७ ई० के लगभग हकीम मोहम्मद करम इमाम ने 'मआदनुल मूसीकी' नामक उर्दू ग्रन्थ की रचना की। इसमें उन्होंने अपने समय के अनेक गायक, वादक और नृत्यकारों के नाम दिए हैं। इस ग्रन्थ में काश्मीर प्रान्त के तत्कालीन शासक फ़ख़रुल्लाह नामक व्यक्ति द्वारा 'मानकुतूहल' ग्रंथ के फारसी अनुवाद 'राग-दर्पण' से भी कुछ नाम लिये गये हैं। इस ग्रन्थ के आधार पर, उस काल में संगीत के कलाकारों के छः वर्ग थे। जो व्यक्ति क्रियात्मक अंग का पूर्ण अभ्यास किए बिना ही संगीत-कला का ज्ञान अर्जित कर लेता था, उसे 'पण्डित' कहा जाता था। इससे अधिक ज्ञान होने पर 'गुनी', गुनी से बड़े कलाकार को 'गंधर्व', गंधर्व से अधिक योग्य होने पर 'गायक' और गायक से भी उत्तम होने पर 'नायक' कहा जाता था। जो लोग ध्रुवपद गाते थे, उन्हें कलावन्त की उपाधि से विभूषित किया जाता था।

मृत्यु तिथियाँ लगभग १. १८६० ई०, २. १९२६ ई०, ३. १९१५ ई०।

इसी ग्रन्थ में खुलासतुल ऐश, नग़माते आसफी, रिसाला नायक, रिसाला अमीर ख़ुसरो, रिसाला तानसेन, संगीत रत्नमाला, संगीत सार, संगीत-दर्पण और सुरसागर नामक ग्रन्थों के नामों के अतिरिक्त भन्नू, तानसेन के साथ पखावज बजानेवाले भगवान पखावजी, बख्शू, धोंधू, मीरा मधनायक, बचलसेन, सूरज खाँ, चाँद खाँ कबीर, गुलाम रसूल लखनवी, शेख बहाउद्दीन, शेख शेर मोहम्मद, सुबल सेन, हमीर सेन, बख्त खाँ, रंग खाँ, कन खाँ, धर्मदास, वजीर खाँ इत्यादि पैंतीस गायकों के नाम; हयात, सुघर सेन, किरपा (मृदंगराय) इत्यादि पन्द्रह वादकों के नाम और मियाँ जानी, सोना, मक्खन, छज्जू खाँ इत्यादि अनेक कव्वालों के नाम गिनाए गये हैं। इनके अतिरिक्त उस काल के प्रसिद्ध कलाकारों में जाफर खाँ, प्यार खाँ, उमराव खाँ व मोहम्मद अली बीनकार, इमाम बख्श, यूसुफ खाँ, रामानुजदास, नरायनदास, बाबू रामसहाय, सैयद मीर अली तथा स्त्री कलाकारों में बी० रहीमन बाई, सुन्दर बाई, बी० लुत्फन, चित्रा, इमाम बाँदी, गुलबदन, सुखबदन, चन्द्रा बाई इत्यादिक अनेक गायक-गायिका तथा तन्त्रकारों व तबला-वादकों में रहीम खाँ, हसन खाँ धाड़ी, अमीर खाँ; सितारियों में रहीमसेन, गुलाम हुसेन, वाजपेयी (बनारस के), नबीबख्श, भवानीसिंह और नासिर खाँ पखावजी; सारंगी-वादकों में अलीबख्श, हसनबख़्श, इब्राहीम खाँ, कल्लो, धन्नो, जतन, साबितअली, हिम्मत खाँ, जहूर खाँ, हसन खाँ, ख्वाजा बख्श धाड़ी और सरोद-वादकों में बहाजउद्दौला धाड़ी तथा गुलाम अली डोम मुख्य कलाकार थे।

नक्कारा बजाने के माहिर व्यक्तियों में कासिम खाँ, घूरन खाँ, मखदूम बख्श और छब्बू; शहनाई-वादकों में अहमद अली

नक्कारची, घसीट खाँ तथा नर्तकों में लल्लू जी, प्रगास, दुर्गा, बैनी प्रसाद, मानसिंह, रामसहाय और नवाब वाजिद अली शाह के नाम उल्लेखनीय हैं।

कुछ अन्य प्रसिद्ध गायक

दूल्हे खाँ, अहमद खाँ, अमरोहे के मुराद अली खाँ, गुलाम सरबर खाँ, तुफैल हुसेन खाँ, सेंदे खाँ[1] और प्यार खाँ, केशव राव आप्टे, कासगंज के ख्वाजा बख्श, दतिया के मिट्ठू खाँ, गुलाम मोहम्मद और प्यार खाँ तथा किराना-घराने के अब्दुल करीम खाँ[2] तथा इनके शिष्यों में रामभाऊ, सवाई गन्धर्व, हीराबाई बड़ोदकर, सुरेशबाबू माने, शंकरराव सरनायक, विश्वनाथ बुआ जादव, मधुसूदन आचार्य, बालकृष्ण बुआ, कपिलेश्वरी इत्यादि अनेक उत्तम गायक हुए हैं। मनहर बर्वे, मुगलू खाँ तथा इनके पुत्र रजबअली खाँ बीनकार और शिष्यों में स्व० अमानअली खाँ, गणपतराव देवासकर, बहरे बुआ तथा बनारस की सिद्धेश्वरी बाई और रलसून बाई, दिल्ली के प्रसिद्ध सारंगी-वादक मम्मन खाँ तथा उनके पुत्र चाँद खाँ व पौत्र नसीर अहमद और हिलाल अहमद विशेष उल्लेखनीय हैं।

कुछ अन्य प्रसिद्ध वादक

सैनिया घराने की तीन-चार शाखाएँ प्रसिद्ध हुईं। इनमें से प्रत्येक शाखा अपने को तानसेन का वंशज बताती है। इस घराने के मुहम्मद अली खाँ रबाबिये अधिक प्रसिद्ध हुए। ग्वालियर के हाफिजअली खाँ के पितामह हकदाद खाँ काबुल

[1] मृत्यु-तिथियाँ लगभग १. १९५० ई०, २. १९३८ ई०।

के रहनेवाले थे। इनके कुटुम्ब में नब्बू खाँ, मुबारकअली और अहमदअली उत्तम सरोद-वादक हैं। शाहजहाँपुर के स्व० सखावतहुसेन (सरोद-वादक) तथा इनके पुत्र उमर खाँ (सरोद-वादक) और इलियास खाँ (सितार-वादक) ने भी नाम कमाया। इनके अतिरिक्त पूर्वी बंगाल के एक किसान परिवार के अलाउद्दीन खाँ, इनके पुत्र अली अकबर खाँ तथा शिष्य पं० रविशंकर बड़े उत्तम कलाकार हैं। मुश्ताकअली, अब्दुल गनी, मुरव्वत खाँ; इटावे के इमदाद खाँ के पुत्र इनायत खाँ तथा वहीद खाँ और पौत्र विलायत खाँ व अमृत खाँ तथा बाबूराव कुलकर्णी उत्तम सितार-वादक हैं।

आगरे के वहीद खाँ और बदल खाँ[1], जावरे के मुराद खाँ, इन्दौर के अब्दुल हलीम खाँ सितार-वादक तथा सारंगी-वादकों में किराना-खानदान के रहमान बख्श, मम्मन खाँ दिल्ली वालों के शिष्य बुन्दू खाँ और अजीमबख्श तथा रामनारायण अधिक प्रसिद्ध हुए। पखावज एवं तबला-वादकों में बनारस के रामसहाय जी, कंठे महाराज, अनोखे लाल, किशन महोराज, सामता प्रसाद (गुदई महाराज), अहमद जान थिरकवा, मोहम्मद जान, आबिदहुसेन, बोलीबख्श के पुत्र नत्थू खाँ, सखाराम, गोविन्दराव बुरहानपुर वाले, हबीबउद्दीन खाँ, करामतउल्ला खाँ, चतुरलाल और अल्लारखा खाँ अधिक प्रसिद्ध हुए।

इनके अतिरिक्त गगन बाबू, पन्नालाल घोष, बिसमिल्लाह खाँ, जी० एन० गोस्वामी, श्रीधर पार्सेकर, इश्तियाक अहमद,

[1] मृत्यु-तिथि लगभग १. १९३३ ई०।

वी० जी० जोग, निखिल बनर्जी, जोई श्रीवास्तव, शिप्रि कणाधर चौधरी और गोपाल कृष्ण बीनकार इत्यादि अनेक प्रसिद्ध वादक हुए।

कुछ प्रसिद्ध नृत्यकार

नृत्यकारों में प्रसिद्ध कलाकार बिन्दादीन, अच्छन महाराज, शम्भू महाराज, शंकरन नम्बूदरीपाद, उदय शंकर, रामगोपाल, रुक्मिणी देवी अरुण्डेल, सितारा देवी मृणालिनी साराभाई, दमयन्ती जोशी, बिरजू महाराज, गोपीकृष्ण, वैजयन्तीमाला, रोशनकुमारी, झवेरी बहनें इत्यादि हुए।

संगीत-सम्मेलन

उत्तर-भारत में सर्वप्रथम संगीत-सम्मेलन सन् १९१६ ई० में बड़ौदा में महाराज सियाजी राव गायकवाड़ की संरक्षता में, द्वितीय १९१८ में दिल्ली में नवाब रामपुर की संरक्षता में, तृतीय १९१८ में बनारस में, चतुर्थ और पंचम क्रमशः १९२५ ई० व १९२६ ई० में लखनऊ में हुए।

रवीन्द्र संगीत

इसी काल में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्राचीन बँगला-गान को एक नया मोड़ देकर कीर्तन-पद्धति के आश्रय से शब्दों के भावानुसार गीत-संगीत में एक अद्भुत मिठास भर दिया। यही संगीत 'रवीन्द्र संगीत' कहा जाने लगा।

स्कूल और कालेज

इन्हीं दिनों संगीत के स्कूलों का खुलना भी प्रारम्भ हो गया। सर्वप्रथम ५ मई १९०१ ई० को लाहौर में पं० विष्णु-

दिगम्बर जी ने 'गान्धर्व महाविद्यालय' नाम से एक संगीत-विद्यालय स्थापित किया। १९०९ ई० में इस स्कूल की शाखा बम्बई में तथा १६ अप्रैल सन् १९४० को दिल्ली में भी स्थापित हो गयी। १९१७ ई० में 'बड़ौदा म्यूजिक कालिज' और खुल गया।

सन् १९२६ ई० में एक स्कूल (आधुनिक नाम भातखण्डे यूनीवरसिटी तथा प्राचीन मैरिस म्यूजिक कालिज) लखनऊ में, दूसरा (माधव संगीत विद्यालय) ग्वालियर में तथा तीसरा (विष्णुदिगम्बर संगीत विद्यापीठ या प्रयास संगीत समिति) इलाहाबाद में स्थापित हो गया।

इसी काल में पं० भातखण्डे और पं० विष्णुदिगम्बर पलुस्कर ने अपनी-अपनी स्वरलिपि-पद्धतियाँ प्रचलित कीं।

पत्र-पत्रिकाएँ

इस काल में संगीत-कला पर कुछ मासिक पत्र भी निकले; जिनमें 'संगीतामृत प्रवाह', 'संगीत', 'संगीत कला विहार', 'संगीत लहरी', 'मौसीकार', 'रिसालए तानसेन', 'संगीत माधुरी', 'कलावन्त', 'म्यूजिक मिरर', 'संगीत कला', 'गंधर्व', 'रागिनी' और 'फिल्म-संगीत' इत्यादि के नाम प्रमुख हैं।

□ □ □

आधुनिक युग–२
(१९४७ ई० के उपरांत)

सन् १९४७ में स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद देश ने अँगड़ाई ली। डेढ़ सौ वर्षों की गुलामी की सारी शृंखलाएँ एकसाथ टूट गयीं। जनता में नई कल्पनाओं एवं नये विचारों ने जन्म लिया। इस संक्रमणावस्था में पुरानी परम्परागत कल्पनाओं को एक धक्का लगा। इन सब बातों का प्राकट्य कला के सभी क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होने लगा। इससे संगीत भी अछूता न रहा। परतन्त्रता के दिनों में हमारी इस सांस्कृतिक निधि की ओर ध्यान नहीं दिया गया था। इतना ही नहीं, वरन् इसकी बहुत-कुछ उपेक्षा भी की गयी थी। स्वाधीनता के बाद सरकार तथा जनता ने एकसाथ ही देश की सांस्कृतिक परम्पराओं का पुनरुत्थान करने के लिए कमर कसी। अब संगीत, विचारों के आदान-प्रदान का एक माध्यम बन गया और संस्कृति का मापदण्ड। आजकल संगीत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान द्वारा नव-जागरण, नवीन संदेश और भव्य मैत्री स्थापित की जा रही है। शिष्टमण्डलों द्वारा भारतीय संस्कृति एवं कला के प्रचार और प्रसार का कार्य स्वयं केन्द्रीय सरकार उत्साह से कर रही है। उसका यह प्रयत्न स्तुत्य है।

आज भारत में शास्त्रीय संगीत के पुनरुत्थान के प्रति सबसे

अधिक जागरूक हम भारतीय आकाशवाणी को पाते हैं। आकाशवाणी से शास्त्रीय संगीत की विभिन्न धाराएँ एक नियोजित क्रम में प्रसारित होती रहती हैं। कर्नाटक और हिन्दुस्तानी संगीत-स्कूलों में रागों के साम्य से सम्बन्धित संगीत-समारोह, संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रम तथा रेडियो-संगीत-सम्मेलन इस दिशा में किए गए आकाशवाणी के विशिष्ट प्रयास हैं। त्यागराज तथा तानसेन जैसे संगीतकारों, विष्णु-दिगम्बर जैसे गायकों एवं भातखण्डे जैसे संगीतज्ञों की स्मृतियों में वार्षिकोत्सवों का आयोजन तथा कर्नाटिक और हिन्दुस्तानी, दोनों ही संगीत-स्कूलों के प्रमुख गायकों तथा वादकों के कार्य-क्रम प्रस्तुत करते रहने का आकाशवाणी का कार्य भी शास्त्रीय संगीत की सुरक्षा एवं प्रसार के लिए किए गए महत्त्वपूर्ण कार्यों की एक कड़ी है।

आकाशवाणी ने केवल शास्त्रीय संगीत के लिए ही जनरुचि की सर्वथा उपेक्षा नहीं करदी, अपने सरल संगीत-विभाग द्वारा फिल्म-संगीत के पूरक रूप में उसी शैली का संगीत प्रस्तुत करके अपने श्रोताओं को संगीत-रुचि को शनैः-शनैः शास्त्रीय संगीत की ओर लाने का प्रयास किया है। आकाशवाणी का बच्चों के लिए संगीत-शिक्षा कार्यक्रम और आचार्य बृहस्पति द्वारा की गयी संगीत-चर्चा, आगे आनेवाली पीढ़ी को संगीत-प्रेमी बनाने के लिए विशेष महत्त्व के हैं।

भारत के सांगीतिक पुनरुत्थान के प्रति जागरूक संस्थाओं में 'संगीत नाटक अकादमी' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसके द्वारा कलाकारों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाना शास्त्रीय संगीत के इतिहास में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

स्वाधीनता के पूर्व भारत के कुछ ही विश्वविद्यालयों ने संगीत को अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया था। शासकों की दृष्टि में यह विषय एम०ए० तक के स्तर का था ही नहीं, परन्तु स्वाधीनता के उपरांत अधिकांश विश्वविद्यालयों और शिक्षा-संस्थाओं ने इसे अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया। इससे ऐसे संगीत-प्रेमियों को जो नियमित रूप से शिक्षक रख-कर संगीत नहीं सीख सकते थे, बहुत लाभ हुआ है।

आज केन्द्रीय सरकार शिक्षा-पात्र विद्यार्थियों को संगीत सीखने के लिए छात्रवृत्ति भी दे रही है।

भारत की वाद्य-वृन्द-परम्परा, जो विदेशी शासकों के समय में मृतप्रायः हो चुकी थी, अब आकाशवाणी के केन्द्रों द्वारा पुनः उत्थान की ओर अग्रसर हो रही है। पं० रविशंकर जी द्वारा यूरोप के लगभग समस्त देशों के प्रमुख नगरों में हिन्दुस्तानी संगीत के स्कूलों का स्थापित हो जाना इस काल में संगीत के इतिहास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है।

राष्ट्रीय गीत का इतिहास

'वन्दे मातरम्' गीत सन् १८८२ ई० में बंकिमचन्द्र चटर्जी के प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ' में प्रकाशित हुआ था। परन्तु सन् १८९६ ई० में इसे राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सार्व-जनिक रूप से गाया गया था।

'जन-गण-मन' नामक राष्ट्रीय गीत गुरुदेव रवीन्द्रनाथ

टैगोर द्वारा सम्पादित 'तत्त्वबोधिनी' नामक पत्रिका में सन् १९१२ ई० में 'भारत-विधाता' शीर्षक से छपा था।

राष्ट्रीय गीत के बारे में निर्णय होते समय काफी मतभेद रहा। अंत में २४ जनवरी, १९५४ ई० को 'जन-गण-मन' गीत को राष्ट्रीय गीत स्वीकार किया गया। इसके साथ ही यह भी तय हुआ कि 'वन्दे मातरम्' को भी 'जन-गण-मन' के समान ही सम्मान दिया जाएगा।

□ □ □